रिकॉर्ड :– भोलेनाथ से निराला..... ॐ पिताश्री 22/6/64

ओम् शांति। भक्तिमार्ग में जो हो गए हैं उनकी महिमा गाते हैं कि ऐसा था। जो यहाँ है तो कहेंगे, ऐसे है। शरीर छोड़ गया तो कहेंगे, ऐसा था। तो भोलानाथ भी था ज़रूर, नहीं तो महिमा क्यों होती? अभी प्रैक्टिकल में है। सब भक्तों का भगवान एक है। भक्तों का रक्षक वा भक्तों को सद्गति देने वाला। उनको ही जादूगर कहेंगे। गाया भी जाता है– सर्व का सद्गति दाता। सर्व को सद्गति अभी मिलती है। सभी इस समय दुर्गति में हैं। नम्बरवार जो वैराइटी धर्म वाले मनुष्य मात्र हैं, सबको गति–सद्गति देनी है ज़रूर। सब मनुष्य मात्र मुक्तिधाम में ज़रूर जाने हैं। फिर आते हैं सतोप्रधान में। नम्बरवार ही आवेंगे ना! पहले देवताएँ, फिर क्षत्रिय, फिर वैश्य आवेंगे, वर्ण बदलेंगे ज़रूर। नेहरू था, मर गया। इनकी महिमा करेंगे। यह तो अल्प काल के लिए महिमा चलेगी; क्योंकि बच्चे जानते हैं, विनाश सामने खड़ा है। सबसे जास्ती महिमा होती है, जो पहले–2 आते हैं। भक्तिमार्ग में पहले–2 शिवबाबा की ही पूजा शुरू होती है। अभी होकर जाते हैं। इनका गायन–पूजन फिर भक्तिमार्ग में होगा। सतयुग में तो भक्ति होती नहीं। उन्हों को वहाँ यह भी पता नहीं रहता कि पहले क्या था अथवा सतयुग के बाद त्रेता होगा। इसमें बुद्धि से काम लेना होता है कि ठीक है ना। भक्तिमार्ग शुरू होता है द्वापर से। जो बुद्धिवान बच्चे हैं वह अच्छी रीति समझ सकते हैं, जिनको ज्ञान की माला पड़ी हुई है। हैं सब पैरेट्स। कोई को अच्छी माला रहती है, कोई को कैसी। कोई तो समझते नहीं हैं कुछ भी, कबूतर हैं। तोते को तो सिखलाया जाता है, वह रिपीट करते हैं। कबूतर सीख नहीं सकते हैं। अमरनाथ में भी कबूतर को रखा है। कबूतर सिर्फ पैगाम ही पहुँचाते हैं, तोते जो सुना सो रिपीट करते हैं। कबूतर रिपीट नहीं करते हैं। यहाँ पर ऐसे हैं, जो सुनकर फिर रिपीट नहीं कर सकते, उनको कबूतर कहेंगे। इस समय अनुसार ह्युमन पैरेट्स भी हैं, ह्युमन पिजन्स (कबूतर) भी हैं। इस समय के जो भी मनुष्य हैं, जो कुछ बोलते हैं, सो कोई काम का नहीं। बाप है रूप–बसंत। बाबा ने समझाया है, इनका कोई इतना बड़ा भी (ज्योतिर्लिंगम) रूप नहीं है। कोई पूछे, शिवबाबा का रूप क्या है? तो समझाना है– शिवबाबा का रूप ऐसा ही है जैसे आत्मा का रूप है। जैसा बाप वैसा बच्चा। आत्मा कोई छोटी–बड़ी नहीं होती है, न बाप कोई बड़ा है। वह है प०पि० परम+आत्मा (मा)ने परमात्मा। वह हमको समझाते हैं। उनका नाम ही है– भोलानाथ। बहुत भोला है, अपनी तो एक कौड़ी की भी तमन्ना नहीं रखते हैं। बच्चे निश्चय करते हैं, प०पि०प० ही इस शरीर द्वारा समझाते हैं। ऑरगन्स बिगर तो आत्मा बोल न सके। बाप खुद बैठ बतलाते हैं। कहते भी हैं, परमात्मा आते हैं, उनका नंदीगण भी है। उन्होंने बैल रख दिया है। जनावर तो नहीं हो सकता। ऐसे थोड़े ही है, छलांग लगाकर बैल पर चढ़ते हैं। कहते हैं, भागीरथ, भाग्यशाली रथ; परन्तु कोई को पता नहीं है वह पतित–पावन कैसे आते हैं नर्क को स्वर्ग बनाने। ज़रूर आया होगा तब तो गाते हैं न। भक्ति भी पहले–2 शिवबाबा की करेंगे। नम्बरवन है वह। वास्तव में सच्ची महिमा उनकी ही है। अभी तो कुत्ते–बिल्ले आदि सबकी महिमा करते रहते। नंदीगण बनाते हैं, बैल को लेकर घूमते हैं, फिर बैल से दूध निकालते हैं। अभी यह है नंदीगण रथ। शिवबाबा इसमें आकर तुमको ज्ञान सुना रहे हैं, ज्ञान दूध दे रहे हैं। उनकी महिमा कितनी है! भोलेनाथ है भक्तों की झोली भरने वाला। शिव के आगे नहीं कहेंगे, झोली भर दे; क्योंकि समझते हैं वह निराकार है। शंकर के आगे झोली ले जाते हैं भरने लिए। विष्णु व ब्रह्मा के पास नहीं जाते हैं, शंकर पास जाते हैं; क्योंकि शिव और शंकर को मिला दिया है। समझते हैं, शंकर शिव का ही रूप है। पूजा करने वाले कुछ भी ऑक्युपेशन को नहीं जानते हैं; क्योंकि जो पहले–2 पुजारी बना है, उनको ही कुछ पता न था। इनको कहेंगे, आप ही पूज्य देवी–देवता, फिर आप ही पुजारी। अभी तुम समझते हो, हम ही पूज्य देवी–देवता थे, फिर हम ही पुजारी बनते हैं। शिव तो है मूलवतन निवासी; परन्तु मंदिर तो हैं ना। सूक्ष्मवतनवासी ब्र०वि०शं० का भी मंदिर यहाँ हैं;

क्योंकि गाते तो हैं ना। शिव को भी आना पड़ता है। सिर्फ एक शंकर को नहीं आना पड़ता है। उनका तो यहाँ काम है नहीं। शंकर द्वारा विनाश होता है। त्रिमूर्ति नाम है न! त्रिमूर्ति मार्ग भी नाम रखते हैं, त्रिमूर्ति का स्टैम्प भी बनाया है। उसमें फिर शेर दिखाया है और नीचे लिखा है सत्यमेव जयन्ती। ऐसे ठीक है, सिर्फ शिव का नाम–निशान ना रखा है। सत्यमेव जयन्ती एक जानवर के नीचे थोड़े ही लिखा जाता है। सत्य तो एक बाप है, जो ही सच्ची कथा सुनाए हमको विजय पहनाते हैं। यह है सब बातें। बच्चे अच्छी रीति समझते हैं तो मास्टर नॉलेजफुल बनते जाते हैं। कब से नॉलेज सुनना शुरू किया है, इतनी सब मुरलियों के कागज़ रखें तो यह सारा महल भर जावे। कितने कागज़ खपाय होंगे और खपावेंगे। बच्चों पास ज़रूर जावेंगे। लिथो होते रहेंगे। बहुत कॉपियाँ निकलेंगे। झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। बच्चे जानते हैं, रास्ते में माया के तूफान भी आते हैं, कई फूल गिर पड़ते हैं। मुहलरा मुख में पड़ा हुआ तो माया कुछ भी कर नहीं सकती। बाबा को याद करना भी तो बहुत सहज है। हम आत्मा है। आत्मा कहती है, मेरा स्वधर्म है शांत। हम सब परदेशी हैं। इस पराए देश में आते हैं। एक गीत है न– दूर देश के रहने वाले...। सब आत्माएँ दूर देश की रहने वाली हैं। बापदादा कहते हैं, तुम अब जान गए हो कि बरोबर हम परदेश के हैं, बहुत दूर से आते हैं, जिसको निराकारी दुनिया कहा जाता है। दुनिया में तो बहुत होंगे ना। तुम जानते हो हम सब ... परदेशी हैं। भक्तिमार्ग में फिर बाबा परदेशी को याद करते हैं। आगे ऊपर ज़रूर उठावेंगे। "ओह गॉड फादर!" कोई रहम माँगेंगे, कोई क्या माँगेंगे। भक्त चाहते हैं, भगवान आओ। क्या आकर करे? तुम बच्चों को पता है, बाबा परमधाम से आया है, कहते हैं– मुझे कलहयुगी, पतित दुनिया को स्वर्ग, पावन दुनिया बनाना है। तुमको कोई मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं। मनुष्य न अपनी सद्गति कर सकते, न और को सद्गति दे सकते हैं। कायदा नहीं। अभी नाटक पूरा होता है। अंत में सब एक्टर्स को हाजिर होना है। गीता में भी है, सिर्फ शिवबाबा के बदले कृष्ण भगवानवाच्य लिख दिया। कृष्ण तो है फर्स्ट प्रिंस, इनके लिए समझते हैं कि इसने राजयोग सिखाया था; परन्तु अभी तुम जानते हो, राजयोग सिखलाने वाला भोलानाथ आया है। गीता में कृष्ण (का) नाम दे दिया है। भोलानाथ, जो नॉलेजफुल है, वह कहाँ गया? फिर कृष्ण पर बहुत उल्टे कलंक भी लगाय हैं। बरोबर कलंक लगते हैं; परन्तु कृष्ण पर नहीं लगते, बाप पर लगते हैं। इस (दादा) पर कलंक नहीं लगता था। बाप के आने से फिर कलंक लगे हैं। चलते–2 राही ने आए प्रवेश कर लिया, तब से देखो कितने कलंक लगते आए हैं! यह रास लीला, बाल लीला आदि भी सारा खेल उनका है। वही बच्चों को बहलाते हैं। बच्चे जानते हैं, हमको बाबा मिला हुआ है। बाबा से हम ज्ञान रत्नों की झोली भर रहे हैं। बाकी शास्त्र आदि जो सुनाते हैं, वह कोई ज्ञान रत्न नहीं, वह सब पत्थर हैं। रत्नों की भेंट में वह जैसे पत्थर मारते हैं। शास्त्र सुनते–2 पत्थरबुद्धि बन पड़े हैं। उनको ज्ञान रत्न नहीं कहा जाता। यह है ज्ञान रत्न। एक–2 वर्शन्स लाखों रु. के हैं। वह हैं पत्थर। ईश्वर सर्वव्यापी है, यह है पहला पत्थर। कृष्ण भगवानुवाच, यह दूसरा पत्थर। पत्थर मारते–2 मनुष्य पत्थरबुद्धि हो गए हैं। कुछ भी समझते नहीं हैं। बाप आकर पत्थरबुद्धि से पारस बुद्धि बना देते हैं। कब्रिस्तान से परिस्तान बना रहे हैं। यहाँ तो घड़ी–2 काल खाकर कब्रदाखिल कर देते हैं। वहाँ तो ऐसे नहीं होता, जैसे सर्प पुरानी खाल बदल नई ले लेते हैं वैसे पुराना शरीर बदल नया ले लेते हैं। यह दृष्टांत अभी बाबा देते हैं। उनको फिर सन्यासी लोग अपने काम में ले आते हैं। कई समझाते हैं– बुदबुदा सागर में समा जाता है। कोई कहते, ज्योति ज्योत में लीन हो जाती है। अनेक मत हैं। अब तुमको मिलती है एक मत। तो इस पर चलना पड़े। बाप कहते हैं, तुम जन्म–जन्मांतर पुकारते हो, मैं एक ही बार आता हूँ। तुमने बहुत पुकारा है "मैं गुलाम, मैं गुलाम तेरा"। बाप आकर गुलाम पने से छुड़ाते हैं। तुम गुलाम बन पड़े माया के, बाप आकर उनसे लिबरेट करते हैं। गुरु लोगों की जंज़ीरे, फिर भक्ति की जंज़ीरे, इन सबसे बाप छूड़ा देते हैं। तुम जानते हो, बहुत भक्ति की है,

अब भक्ति का फल देने आए हैं। अब भक्ति का पार्ट पूरा हुआ। ज्ञान, भक्ति, फिर है वैराग। वैराग भी दो प्रकार का है। वह सन्यासियों का वैराग है घर–बार छोड़ने का, यह तुम्हारा है सारी पुरानी दुनिया से वैराग। यह तो तुम बच्चे जानते हो, यह सब भस्म हो जाने हैं। कुछ भी न रहेगा। किनकी दबी रहेगी धूल में.... फिर उसी समय चोर आदि भी आकर लूटते हैं। जैसे एरोप्लैन गिरते हैं, आग लगती है, तो चोर अंदर घुस पड़ते है, आस–पास वाले लूट लेते हैं। टाइम तो मिलता है जब तक पुलिस आवे। यह विनाश तो होना ही है। कितनी बड़ी सृष्टि है। तुम जानते हो, अमेरिका आदि तरफ उन्हों के लिए तो सुख का पॉम्प है। क्रिश्चियन पिछाड़ी वाले हैं न। उन्हों के सुख का पार्ट अभी है। कितनी हिम्मत रखते हैं– हम स्टार पर, चंद्रमा पर जावेंगे। सूर्य तरफ नहीं जाते; क्योंकि समझते हैं वह जला देंगे। कोशिश करनी है चंद्रमा में, स्टार में जमीन ले लेवे। समझते हैं चाँद में, सूर्यवंशी–चंद्रवंशी नाम सुना है, तो समझते हैं कोई वहाँ दुनिया है। यह कोई दुनिया है। जापानी लोग अपन को सूर्यवंशी कहलाते हैं। कोई क्या, कोई क्या कहलाते हैं। अब तुम जानते हो, भारत बरोबर सूर्यवंशी–चंद्रवंशी था, स्वर्ग था, इन जैसा ऊँच खण्ड कोई हो नहीं सकता। यह ड्रामा बना–बनाया है। फिर अगर आदि करने की तो कोई बात नहीं, यह तो समझाने की बात होती है। भारत की महिमा अभी यह है। हम कहते हैं, गीता में अगर शिवबाबा का नाम होता तो सब इनको बहुत मान देते; परन्तु ऐसे नहीं कि शास्त्र फिर बनेंगे तो उसमें चेंज करेंगे। नहीं। बनावेंगे फिर भी वही शास्त्र, जो अब हैं। अगर शिवबाबा को जान जावें तो सब उनकी कितनी महिमा करते। सबका सद्गति दाता बाप है तो सबको फूल चढ़ाना पड़े। प०पि०प० का नाम डाले तो पहले–2 सब उनके पास जावें। अभी तुम जानते हो, ल०ना० आदि जो भी हैं, वह सब इस समय कौड़ी तुल्य हैं, कब्रदाखिल हैं। बाप न आए तो वह सब तमोप्रधान ही रहे ना। सबका मोस्ट बिलवेड, मुक्ति दाता वह बाप है। कहते हैं– मैं सबको ले जाता हूँ, फिर जो भी आते हैं, पहले वह जीवनमुक्त रहते हैं। बच्चे जब शांत में बैठते हैं तो हमेशा स्वधर्म में बैठना है, बाप को याद करना है। शांति के लिए कोई जंगल में नहीं जाना पड़ता है। कोई भी सन्यासी आए तो तुम समझा सकते हो– शांति तो गले का हार है, तुम ढूँढ़ते कहाँ हो? आत्मा कहती है– मेरा स्वधर्म है शांत, फिर यहाँ शरीर में आने से टॉकी बनता हूँ। साइलेंस में तो नाटक होता नहीं। पहले मूवी वाइसकोप चलता था। सूक्ष्मवतन में भी मूवी होते हैं, आवाज़ नहीं निकलता। उसी समय जो कल्प पहले समझा था, वह समझकर, आकर सुनाते हैं। कोई नई बात नहीं। सारा ड्रामा हमको 84 जन्म नाच नचाते हैं। यह अनादी ड्रामा है। सब शरीर लेकर अपना–2 पार्ट बजाते हैं। ''मीठे–2 बच्चों!'' यह शिवबाबा कह रहे हैं, आत्माओं से बात करते कि माम् एकम् याद करो। यह नहीं कहेगा। कितनी गुप्त बातें हैं! यह कहता है, मुझे भी उनको याद करना पड़ता है। मैं भी ब्रह्मपुत्रा नदी हूँ। ब्रह्मपुत्रा नदी और सागर का मेला होता है। सरस्वती नदी और सागर का मेला नहीं लगता है। मेला एक ही लगता है कलकत्ते में। ब्रह्मपुत्रा नदी का सागर पर बड़ा भारी मेला लगता है। ब्रह्मपुत्रा एक है, मेला भी एक ही बार लगता है। तो यह भी यहाँ मेला लगता है। बाप जावे तब दूसरे सेन्टर पर मेला हो। सागर न हो तो मेला थोड़े ही कहेंगे। मम्मा जाती है तो नदियों का मेला लगता है। यह मेला लगा है सागर और ब्रह्मपुत्रा नदी के साथ। यह समझ तुम आप ही ले आ सकते हो। अगर विचार–सागर–मंथन कर सकते हो तो विचार करो। भल यह सागर चेतन है। वह तो जड़ है। देहली में जावेंगे तो सागर ब्रह्मपुत्रा का मेला है। सब नदियाँ सागर से निकली हुई हैं। यह है मंगल मिलन। बाप घड़ी–2 समझाते हैं, मामेकम् याद करो। मम्मा भी कहेगी, बाबा को याद करो। माम् एकम् याद करो, बच्चे, यह मम्मा नहीं कह सकती। बाबा इन द्वारा कह सकते हैं– बच्चे, मामेकम् याद

करो। तुम सन्मुख बैठे हो न। तुम कहेंगे, शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो। सबको कहना है– बाप को याद करो, अंत मते सो गते हो जावेगी। मौत तो सबका होना है। अभी तो क्या लगा पड़ा है! अमेरिका आदि कितना बड़ा है! फिर यह है बॉम्बे आदि, कुछ भी रहेगा नहीं। बदल थोड़े ही होंगे। अभी तो राज्य करने वाले कितने करोड़ हैं। वहाँ तो शुरू में थोड़े आते हैं, पीछे आते रहते हैं। बच्चों को समझाया जाता है, माया बड़ी प्रबल है– याद जूटने नहीं देगी, विघ्न डालती रहेगी, बाबा से बेमुख करेगी; परन्तु पुरुषार्थ पूरा करना है। पक्का महावीर बनना है। योग ऐसा पक्का रहना चाहिए जो माया का तूफान कब हिला न सके, माया कब मूर्छित न करे। संजीवनी बूटी को याद करो। मनमनाभव, तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बाबा ने समझाया है, योग अक्षर नहीं कहो। बाप को याद नहीं कर सकते हो? बाप को जितना जास्ती याद करेंगे तो वर्सा भी जास्ती लेंगे। बलि चढ़ना है, सब कुछ बाबा के हवाले। इस (दादा) ने सब कुछ बाबा के हवाले कर दिया, फिर भूखे थोड़े ही मरते हैं। समझते हैं, बाबा को सब कुछ दे दिया, उनकी ही वस्तु है, हम इसमें मोह क्यों रखें! अशरीरी बन बाप को याद करते हैं। इसको कहा जाता है– जीते जी मर कर पुरुषार्थ करना। आत्मा बाप को याद करती है। अब उनसे दिल लगी है; जैसे आशूक–माशूक की दिल लग जाती है न। एक बार देखा, बस, दिल लगी। काम करते हुए भी सामने माशूक याद आता रहेगा। तुम सब आशूक बने हो उस माशूक शिवबाबा का(के)। एक बार देखा, बस, याद ठहर जाती। आशूक–माशूक का कोई विकार के लिए प्यार नहीं होता है। इस समय आशूक हो सब शिवबाबा पर। वह तुमको बहुत सुख देते हैं। मुसाफिर है। तुमको हसीना बनाते हैं। कीड़े से क्या बनाए देते हैं! (भ्रमरी का मिसाल) बाबा भी कहते हैं, भूँ–2 करते रहो। तुम ब्राह्मण ही शूद्र बुद्धि कीड़ों को भूँ–2 करते हो। सब मिसाल अभी के हैं। बाप समझाते हैं– लाडले बच्चे, अब तुम माशूक बाप से स्वर्ग का खज़ाना लेते हो। वह माशूक होते हैं जिस्मानी, यह है रूहानी। एक परमात्मा बाप के साथ योग लगाना है, बस। ऐसा नष्टोमोहा आशिक बनना है।

चेम्बूर :– अल्लाह कहते हैं– आधा कल्प तुम आशिक हो, अब माशूक को याद करो तो सब दुख दूर हो जावेंगे, फिर तुम मेरे साथ आकर मिलेंगे। मैं सब दुखों से लिबरेट करने वाला हूँ। इनको प्राइज़ क्या देंगे! वह खुद प्राइज़ देते हैं। जो सर्विस करते हैं उनको प्राइज़ मिलती है वैकुण्ठ का मालिक बनने की– फिर चाहे सूर्यवंशी, चाहे चंद्रवंशी। टिकट ले खुद कहते हैं– हे बच्चों! हे आशिकों! मुझ बाप को याद करो तो तुमको वर्सा मिल जावेगा। मनुष्य कई दिन व्रत रखते हैं। तुम क्यों नहीं बृहस्पत और सोमवार दिन यह व्रत रखते हो कि हम सारा दिन बाबा को याद करें। इसमें तो बड़ी भारी कमाई है। वह तो खाना नहीं खाते, व्रत रखते हैं। वह हुई भक्तिमार्ग की रस्म। तुम बाबा को याद करने का व्रत रखो तो बहुत कमाई है। तुम करके देखो, फिर बाबा को चार्ट भेज दो– बाबा, आज हम इतना समय व्रत में रहे। बाबा ऐसे नहीं कहते, भूख हड़ताल करो। खाओ भी भल, साथ–2 व्रत रखो बाबा को याद करने का। बाबा कहते हैं, सारे दिन में चार घण्टे का, दो घण्टे का व्रत रखकर दिखाओ। बाबा को चार्ट दिखाओ। बाबा युक्तियाँ बहुत बतलाते हैं। वह तो 7 रोज़ निर्जल रखते हैं। बाबा तो फिर पदम देते हैं। भल धंधा–धोरी करो, सिर्फ चार्ट भेज दो। बाबा की यह बात सब बच्चे मुरली से सुनेंगे। अच्छा, (आज टोली है सीरा और आम) फल सबसे अच्छा है। फल आप ही बन जाता है, पकाना नहीं पड़ता। पकाने से फिर भी बहुतों की दृष्टि आदि पड़ती है। इसलिए फल आहार कहते हैं। सूक्ष्मवतन में भी बाबा तुमको सूबीरस पिलाते हैं, एपिल खिलाते हैं, सीरा–पूरी नहीं खिलावेंगे। बाबा को याद करके भोजन बनाने से इसमें ताकत रहती है। बाबा भी कभी–2 सोचता है, बाबा को अपने हाथ से बनाए खिलाऊँ। यह बाबा को याद करने की युक्ति है। सब रूहानी आशिकों को माशूक बाप का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ